इकाई 6: एकात्मक एवं संघात्मक राज्य (Unitary and Federal States)

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 एकात्मक राज्यों की प्रकृति

6.3 एकात्मक राज्यों का विकास एवं विवरण

6.4 एकात्मक राज्यों के प्रकार

6.5 संघात्मक राज्यों की प्रकृति

6.6 संघात्मक राज्यों के प्रकार

6.7 संघवाद का भौगोलिक पक्ष

6.8 सारांश

6.9 शब्दावली

6.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

8.11 बोध प्रश्नों के उतर

6.12 अभ्यासार्थ प्रश्न

6.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन से आप समझ सकेंगे कि –

- एकात्मक राज्य क्या होते है,
- एकात्मक राज्यों के कितने प्रकार हैं,
- एकात्मक राज्यों का विश्व वितरण कैसा है,
- संघात्मक राज्यों की क्या विशेषतायें एवं प्रकृति है,
- संघात्मक राज्यों के प्रकार कौनसे हैं, तथा
- संघात्मक का भौगोलिक पक्ष क्या है ?

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

विश्व में विभिन्न राज्यों में शासन व्यवस्था के विविध स्वरूप है जो राज्यों के स्वरूप एवं संगठन पर निर्भर हैं । राजनीतिक भूगोल में राज्यों के स्वरूप, प्रकृति, प्रशासन तथा उनके संगठन का भौगोलिक परिवेश में अध्ययन किया जाता है क्योंकि राज्य एक भौगोलिक इकाई है जिसका क्षेत्रीय विस्तार होता है अत: यह स्थानिक इकाई (Spatial Unit) भी है । राज्य एक भौगोलिक एवं क्षेत्रीय अथवा स्थानिक इकाई होने के कारण भूगोलवेत्ताओं ने राज्यों के प्रकार एवं प्रशासनिक संगठनों का अध्ययन

प्रारम्भ किया तथा उनके अस्तित्व और सफलता के कारणों पर प्रकाश डाला । इस सम्बन्ध में ब्लिज ने लिखा है:

"Political geographers are naturally interested in the ways in which states in which state organized in spatial political terms. Such organization is the result of lengthy processes of experimentation and modification in broades terms we Recognize unitary states and federal states.''

-Harm.J.de.Blij

इस दिशा में ओ.एच. के. स्पेट (O.H.K.Spate) का प्रपत्र Geography and अति महत्वपूर्ण है, जो 1944 में प्रकाशित हुआ । प्रेसकॉट (Prescott) द्वारा 1968 में नाइजीरिया, बर्न और हॉफमेन (Burn and Haffman) द्वारा यू.एस.ए. का, रोबिन्सन (Robinson), ब्लिज (Blij)), पोन्ड्स आदि अनेक भूगोलवेत्ताओं ने इस दिशा में कार्य किया । आर. डी. दीक्षित (R.D.Dikshit) ने इस विषय पर अत्यधिक महत्वपूर्ण अध्ययन किया है तथा अनेक प्रपत्र भी प्रकाशित किये हैं, इनमें प्रकाशित लेख 'Geography and Federalism' तथा 1978 में प्रकाशित "The Political Geography of Federalism" विशेष उल्लेखनीय है । इस दिशा में अनेकों अध्ययन होने के पश्चात् भी स्पेट का कथन सत्य प्रतीत होता है–

"Very Little has so far been done to explain the geographical basis of this polity As is true of Political Geography in general generic study of federalism has suffered from the fact that political Geographers ,more than workers in other branches of the subject ,because if their over involvement with the specific and the unique have failed to elolve a valid method of approach for generic studies."

राजनीतिक भूगोल में राज्यों के शासन से सम्बन्धित जो भी अध्ययन किये गये हैं वे अधिकांशत: संघात्मक –राज्यों से हैं । वर्तमान अध्याय में एकात्मक और संघात्मक राज्यों को भौगोलिक आधार को संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है ।

किसी भी राज्य के प्रशासन का मूल स्त्रोत उसमें निहित शक्तियों में होता है। प्रशासनिक शक्तियों का विभाजन क्षेत्रीय (territorial) एवं कार्यात्मक (functional) आधार पर होता है । कभी यह शक्तियाँ एक केन्द्र में एकीकृत हो जाती हे तो वह एकात्मक ग्रहण कर लेता है, जबकि संघात्मक शासन में शक्तियाँ प्रान्तों या अन्य भौगोलिक उप–विभागों में विभक्त होती हैं । कुछ ऐसे भी देश हैं जिनमें केन्द्र और राज्य की शक्तियों का स्पष्ट विभाजन होता है, जैसे भारत । मूलरूप से राज्यों को

एकात्मक एवं संघात्मक दो वृहत विभागों में ही विभक्त किया जाता है, उनका समुचित विवेचन अपेक्षित है ।

6.2 एकात्मक राज्यों की प्रकृति (Nature of Unitary States)

एकात्मक राज्यों के प्रशासनिक शक्तियाँ केन्द्रीय होती हैं अर्थात् केन्द्र से समस्त शासन एवं प्रशासन संचालित होता है । अंग्रेजी शब्द 'Unitary' लेटिन शब्द 'Unitas' से लिया गया है जिसका अर्थ एकता या Unus(एक) से है अर्थात् जहाँ एक शक्तिशाली केन्द्र हो और उसी में समस्त शक्तियाँ निहित हों । इसको स्पष्ट करते हुए सी.एफ.स्ट्रांग ने लिखा, है "एकात्मक राज्य वह है जो एक केन्द्रीय सरकार में संगठित होता है अर्थात् जो भी शक्तियाँ विभिन्न क्षेत्रों की होती है वे केन्द्र द्वारा प्रशासित होतो हैं तथा उन्हीं के निर्णय पर निर्भर करती हैं, इसमें केन्द्रीय शक्ति सर्वोच्च होती हैं तथा उसके उपविभागों को उस पर प्रतिबन्ध का अधिकार नहीं होता।"

"A unitary state is one organizes under a single central government ,that is to say ,whatever powers are possessed by the various districts with in the area administered as a whole by the central government are held at the discretion of that government ,and the central power is supreme over the without any restrictions.Imposed by any law granting special powers to its parts."

-C.F.Strang Modern Political Constitution, p.610.

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि एकात्मक प्रशासन में केन्द्रीय व्यवस्थापिका. केन्द्रीय कार्यपालिका और केन्द्रीय न्यायपालिका सर्वोच्च होती है । केन्द्र सरकार राज्य या प्रान्तों को अपने स्तर का स्वीकार नहीं करती अपितु वे उन पर निर्भर करते हैं तथा निर्णय लेने की पूर्ण क्षमता केन्द्र में निहित होती है । ब्रिटेन, फ्रांस, डेनमार्क, बेल्जियम हालैण्ड, स्पेन, नार्वे, स्वीडन, इटली, टर्की, अफगानिस्तान, न्यूज़ीलैण्ड आदि में इस प्रकार का शासन या सरकार है ।

एकात्मक राज्य की मुख्य विशेषता सभी राज्यों प्रान्तोंद्ध को केन्द्र के अधीन करना है । केन्द्रीय व्यवस्थापिका में सम्पूर्ण शक्तियाँ निहित होती हैं स्थानीय निकायों एवं उप–विभागों को केन्द्र प्रशासनिक उत्तरदायित्व जो वह उचित समझता है, सौंप देता है । यह छोटे राज्यों के लिये उपयुक्त होता है, इसे अधिक स्थिर, लचीला एवं साधारण माना जाता है जिसमें प्रशासनिक खर्च कम होता है । किन्तु केन्द्र में अत्यधिक शक्तियों का केन्द्रीयकरण से निरकुंशता को प्रवृति का भय रहता है तथा राज्यों की समस्याओं अथवा विकास की अनदेखी भी होने की संभावना रहती है ।

ब्लिज (Blij) ने एकात्मक राज्यों की चार विशेषतायें वर्णित की हैं, वे हैं–

(1) ये छोटे राज्यों के लिये उपयुक्त है

(2) राज्यों का क्षेत्र संगठित होना चाहिये. अर्थात् दूर–दूर विभक्त नहीं होना चाहिये,

(3) ये राज्य अपेक्षाकृत सघन बसा होना चाहिये, एवं

(4) एकात्मक राज्य में एक मूल स्थल (Core area) होना चाहिये ।

एकात्मक राज्यों में उपर्युक्त विशेषतायें सामान्यतया होती है किन्तु आवश्यक नहीं कि सभी में ये हो, स्वयं ब्लिज ने स्पष्ट किया है कि ये चारों विशेषतायें पूर्णतया एकात्मक राज्यों में हो यह जरूरी नहीं किन्तु अधिकांशत: विश्व के एकात्मक राज्यों में ये दृष्टिगत होती हैं ।

6.3 एकात्मक राज्यों का विकास एवं वितरण (Evolution and Distribution of Unitary States)

यूरोप में अनेक एकात्मक राज्य हैं और यही से एकात्मक राज्यों का 'उद्भव हुआ है, विश्व के अन्य भागों में भी इस प्रकार के प्रशासन का विकास हुआ है । विश्व में आज भी एकात्मक शासन वाले राज्य अधिक, संघात्मक कम । यूरोप में भिन्न–भिन्न राज्यों के एकात्मक स्वरूप में परिवर्तित होता रहा है और बहुत कम राज्य ऐसे हैं जो एकात्मक की सभी विशेषतायें रखते हों । डेनमार्क में एकात्मक सरकार सफल है, इसका आकार कटा–फटा है । बेल्जियम यद्यपि संगठित आकार का देश है । किन्तु इसमें सांस्कृतिक भिन्नता है और कई मूल स्थल है । इटली भी एकात्मक राज्य है किन्तु लम्बाकार आकार का है । फ्रांस एकात्मक राज्य की आदर्श दिशायें रखता है जो संगठित, एक मूल स्थल से युक्त है, सघन जनसंख्या वाला यह राज्य यूरोप में सभी एकात्मक दिशायें रखता है ।

अनेक पूर्व ओपनिवेशक राज्यों में एकात्मक शासन को अपनाया है । लेटिन अमेरिका में सभी मध्य अमरीकी देशों में एकात्मक सरकारें है । दक्षिणी अमेरिका में कोलम्बिया, इक्वेडोर. पीरू, चिली, बोलीविया, पेराग्वे एकात्मक राज्य हैं । अफ्रीका. मध्य पूर्व के राज्य और अरब देशों में भी एकात्मक राज्यों का स्वरूप है । नाइजीरिया यद्यपि ब्रिटिश उपनिवेश था किन्तु इसने संघीय शासन अपनाया । एशिया में चीन एकात्मक शासन है । द.पू एशिया में मलेशिया: के अतिरिक्त सभी एकात्मक राज्य हैं, अफगानिस्तान, श्रीलंका, पाकिस्तान भी एकात्मक राज्य हैं । अनेक द्वीपों का समूह इण्डोनेशिया और फीलीपाइन में भी एकात्मक प्रशासन है । तात्पर्य यह है कि विश्व के प्रत्येक ' भाग में एकात्मक राज्यों की बहुलता है उनमें छोटे राज्य भी हैं, बड़े भी. सघन जनसंख्या वाले भी हैं विरल भी, संगठित क्षेत्र वाले भी हैं तथा कटे–फटे या विच्छिन्न क्षेत्र वाले भी तथा विविध मूल स्थल वाले भी । इस प्रकार की क्षेत्रीय विविधता ने इसके स्वरूप में भी भिन्नता उत्पन्न कर दी है ।

6. 4 एकात्मक राज्यों के प्रकार (Types of Unitary States)

एकात्मक राज्यों में यद्यपि एकता एवं समरूपता का वर्णन किया जाता है, किन्तु इनमें सांस्कृतिक भिन्नता भी होती है । इसमें अल्पसंख्यक सरकार का बहुसंख्यक जनसंख्या पर अपनी इच्छायें थोपने का भय रहता है । एकात्मक राज्यों में किसी भी प्रकार की सरकार हो सकती है, जैसे निरंकुश. तानाशाही, सम्राट अथवा प्रजातन्त्र । सभी में समयानुसार राजनीतिक एवं क्षेत्रीय समायोजन की आवश्यकता होती है, फलस्वरूप उनके स्वरुप में भिन्नता आ जाती है । इसी भिन्नता के आधार पर वर्तमान में प्रचलित एकात्मक राज्यों के भिन्न–भिन्न प्रकार दृष्टिगत होने लगते हैं, वे हैं – केन्द्रीयकृत, अत्यधिक केन्द्रीय एवं समायोजित ।

1. **केन्द्रीयकृत** (Centralized) – यह एक सामान्य एकात्मक राज्य होता है. जिसमें केन्द्र में शक्तियों का केन्द्रीयकरण होता है । सामान्यतया इन राज्यों में जनसंख्या की एकरूपता होने के कारण वे केन्द्र की सता को स्वीकारते रहते हैं । इसके लिये कभी सांस्कृतिक कारण उत्तरदायी होते हैं तो कभी जातिगत । सामान्यतया इन राज्यों में एक मूल स्थल होता है तथा ये राज्य प्रोढ़ अवस्था में होते हैं । 'डेनमार्क, स्वीडन और नीदरलैण्ड में सम्राट हैं तथा सुने हुए प्रतिनिधि हैं तथा वहाँ की जनसंख्या इसे सहजता से स्वीकार कर लेती है । इसी श्रेणी के अन्य राज्य इटली, आयरलैण्ड, फिनलैण्ड और फ्रांस हैं । जापान. न्यूज़ीलैण्ड आदि देशों में भी इसी प्रकार की एकात्मक व्यवस्था है ।

2. **अत्यधिक केन्द्रीय** (Highly Centralized) – इस प्रकार के एकात्मक राज्यों में क्षेत्रीय विविधता अथवा जातिगत भिन्नता आदि को नियंत्रित करने के लिये केन्द्र के पास असमी शक्तियाँ होती हैं और वह उनका यथा समय उपयोग भी करता है । इसमें तीन प्रकार के राज्य हैं– साम्यवादी देश, एक पार्टी के प्रभुत्व वाले देश एवं तानाशाही । साम्यवादी देशों में पूर्व सोवियत संघ और यूगोस्लाविया संघीय राज्य हैं किन्तु अन्य देशों में एकात्मक शासन है । पोलैण्ड, हंगरी, रूमानिया, बुलगारिया में एकात्मक शासन है तथा साम्यवादी सरकार का पूर्ण नियंत्रण है । चीन विश्व का सबसे वृहद एकात्मक राज्य है, जहाँ साम्यवादी शासन है । अन्य देश जैसे पुर्तगाल, स्पेन, पेराग्वे, ग्वाटेमाला, इथोपिया, घाना, इरान इण्डोनेशिया आदि में यद्यपि साम्यवादी. सरकार नहीं हैं किन्तु केन्द्र अत्यधिक शक्तिशाली है । अनेक अफ्रीकी और एशियाई देशों में शक्ति किसी एक व्यक्ति ने अधिकृत कर ली है, वहाँ तानाशाही स्वरूप उभर कर आता है ।

3. **समायोजित** (Adjusted) – तृतीय श्रेणी में वे एकात्मक राज्य है जहाँ विभिन्न समूहों या क्षेत्रों को समायोजित कर, अधिकारों को उनके अनुरूप परिवर्तित कर दिया जाता है । इसका सर्वोत्तम उदाहरण ग्रेट ब्रिटेन है जहाँ विकेन्द्रीकरण द्वारा समायोजन किया गया है, फिर भी स्काटलैण्ड के निवासी असन्तुष्ट रहते हैं । यहाँ वैल्स और स्काटलैण्ड की राष्ट्रीय भावना को समायोजित किया गया है ।

बोध प्रश्न – 1

1. भौगोलिक दृष्टि से राज्य क्या है?
2. प्रशासनिक शक्तियों का विभाजन किस आधार पर किया जाता है?
3. एकात्मक राज्य में प्रशासनिक शक्तियों का केन्द्र कही होता है?
4. एकात्मक राज्यों के पाँच उदाहरण दीजिये ।
5. एकात्मक राज्यों का उद्भव कहाँ हुआ?
6. एशिया में एकात्मक शासन वाला सबसे बड़ा राज्य कौन सा है?
7. एकात्मक राज्य कितने प्रकार के होते है?
8. विश्व में सबसे बड़ा एकात्मक राज्य कौनसा है?

6.5 संघात्मक राज्यों की प्रकृति (Nature of Federal States)

अंग्रेजी शब्द Federal ' लेटिन भाषा के Foederis से निकला है जिसका अर्थ 'league' (संघ) होता है अर्थात् इसमें अनेक प्रान्तों का संघ होता है जो अनेक कार्यो में स्वतन्त्र होते हैं, साथ ही केन्द्र भी अनेक कार्यो को सम्पन्न करता है । इसमें केन्द्र तथा राज्यों में शक्तियों का विभाजन होता है, संविधान सर्वोच्च होता है तथा एक संघीय न्यायपालिका होती है । ब्लिज के शब्दों में, 'संघात्मक ढांचे में एक केन्द्रीय सरकार होती है जो राज्य के विभिन्न भागों का प्रतिनिधित्व करती है तथा अनेक सामान्य विषय जैसे रक्षा, विदेशी सम्बन्ध, संचार आदि को संचालित करती है तथा राज्य की विभिन्न इकाईयाँ अपना अस्तित्व रखती हैं, राजस्व वसूल करती हैं तथा अपने कानून बनाती हैं ।"

"The federal framework .....is one that permits a central government to represent the various entities within the where the state where they happen to have common interests defence , foreign affairs communications etc .while allowing these various entities to retain their own identities and to have their own laws ,polities customs in certain fields."

- Harm j.de Blij ,Systemetic Political Geography.

ब्लिज की उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि संघात्मक व्यवस्था में एक केन्द्रीय सरकार के साथ–साथ प्रान्तों /प्रदेशों /राज्यों की व्यवस्था होती है । केन्द्रीय सरकार जहाँ रक्षा, विदेश, व्यापार. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, नीति निर्धारण एवं अन्य महत्वपूर्ण प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन . करती है. वहीं प्रान्तीय सरकारों का अपना कार्य क्षेत्र प्रदेश अथवा प्रान्त होता है । इन दोनों में पूर्णतया समन्वय एवं सामन्जस्य होता है तथा संविधान की सर्वोच्चता होती है । विवाद की स्थिति. में संघीय न्यायालय

निराकरण कर निर्णय देता हे । वास्तव में 'संघवाद का उद्भव केन्द्रोन्मुखी एवं बाह्यमुखी शक्तियों के मध्य समायोजना के फलस्वरूप होता है ।

"Federalism is essentially a compromise between centripetal and centrifugal forces that are operative at the same time."

- Riker,W.H.Federalism : Origin ,Operation ,signifience

संघात्मक राज्यों के वर्तमान स्वरूप को यद्यपि अमरीकी देन माना जाता हैं, किन्तु इसका अस्तित्व प्राचीन काल में भी था । ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में ग्रीस में शासन का यही सिद्धान्त था, प्राचीन भारत के गणराज्यों की तुलना भी इसी से की जा सकती है । वर्तमान संघवाद का उद्भव नि:सन्देह अमरीकी पद्धति पर आधारित है, यद्यपि उसमें प्रत्येक राज्य अपनी दृष्टि से परिवर्तन कर लेता है । यह केन्द्रोमुखी एवं बाह्ममुखी शक्तियों के मध्य समायोजन का परिणाम होता है । मूलत: संघ में सभी क्षेत्रों को समन्वित किया जाता है, यह समन्वय उन्हें कतिपय शक्तियाँ एवं राजस्व के अधिकार तथा आन्तरिक प्रशासन की सुविधा प्रदान कर दिये जाते है और बदले में केन्द्र उन्हें सुरक्षा प्रदान करता है । देश के वृहद लाभ एवं विकास हेतु नीति निर्धारित करता है और आपसी विवादों को समाप्त करता है । समय–समय पर आर्थिक सहायता देता है । सैद्धान्तिक दृष्टि से संघात्मक प्रारूप वृहत राज्यों के लिये उपयुक्त होते हैं । विभक्त राज्य एवं लम्बाकार राज्य जिनमें अनेक मूल स्थल होते हैं वहाँ भी यह उपयुक्त होते हैं । कनाडा, नइजीरिया, आस्ट्रेलिया इसके उदाहरण हैं । इन राज्यों में विभिन्न जनसंख्या समूह दूरवर्ती क्षेत्रों में निवास करते है और जनसंख्या कम हैं । सामान्यतया संघात्मक राज्य एक राजधानी के माध्यम से शासन चलाता है जो संघीय क्षेत्र (federal territory) में स्थित होती है । संघात्मक शासन उन राज्यों के लिये भी उपयुक्त –होता है जहाँ विभिन्न धर्म, जाति, भाषा के लोग निवास करते हैं । संघात्मक प्रशासन अधिक लचीला और स्थानीय विकास को प्रोत्साहन देने वाला होता है । संघात्मक राज्यों का भौगोलिक अध्ययन राजनीतिक भूगोल का एक महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि इसमें विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों को राजनीतिक सम्बद्धता प्रदान की जाती है तथा उनमें एकरूपता प्रदान की जाती है । इनकी सफलता की पृष्ठभूमि में भौगोलिक कारक महत्वपूर्ण होते हैं ।

6.6 संघात्मक राज्यों के प्रकार (Types of Federal States)

यद्यपि संघात्मक व्यवस्था वाले राज्यों में मूलभूत एकरूपता होती है किन्तु संघात्मक शासन में भी विविधता है । प्रत्येक संघात्मक राज्य अपनी राजनीतिक–भौगोलिक परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए प्रशासन को समायोजित करता है । संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, आक्ट्रेलिया, मेक्सीको, ब्राजील, वैनेज्वला, अर्जेन्टाइना, नाइजीरिया आदि प्रमुख संघात्मक राज्य हैं, भारत अपने तरह का विशिष्ट संघात्मक राज्य है । ब्लिज ने संघात्मक राज्यों के निम्न प्रकार वर्णित किये हैं, वे हैं– आपसी लाभ पर आधारित, समन्वय या समझौता पर आधारित, केन्द्रीयकृत एवं आरोपित ।

1. आपसी हित पर आधारित संघ राज्य (Federal states based on mutual interest)

कुछ संघात्मक राज्यों में से एक ही प्रकार की जाति अथवा भाषा के लोग हैं तो दूसरों में विविध क्षेत्रीयता वाले, किन्तु दोनों में ही कभी–कभी आपसी हित इस प्रकार –के होते हैं कि वे संघात्मक स्वरूप अपना लेते हैं । कभी उन्हें विदेशी आक्रमण का भय होता हैं तो कभी आन्तरिक कलह और अपनी सर्वोच्चता का । जैसे आस्ट्रेलिया में एक ही भाषा और समुदाय के निवासी हैं, किन्तु उन्हें प्रशान्त महासागर में अपने को सुरक्षित रखने का सदैव ध्यान रहता है । दूसरी ओर कनाडा का संघात्मक राज्य है यहाँ राज्य की जनसंख्या में विविधता है, दो भाषायें और क्षेत्रीय विविधता है. साथ ही इन्हें सुरक्षा भी चाहिये और आर्थिक विकास भी, ये संघात्मक स्वरूप में ही सम्भव है । इसी प्रकार के संघात्मक राज्य ब्राजील और स्विट्जरलैण्ड में संघ की प्रवृति का विकास 1291 से प्रारम्भ हो गया था जब वहाँ के चार कन्टनों (प्रान्तों) ने गोथार्ड दर्रे के माध्यम से व्यापार का सामूहिक प्रयास किया । इसी से एकाकी प्राप्त एक होते गये । इनके पीछे सामूहिक हित की भावना थी । ब्राजील अपेक्षाकृत नवीन संघ राज्य है, जहाँ 1822 में इसका प्रारम्भ हुआ, 1889 तक यह उपनिवेश रहा, 1891 से 1945 तक रिपब्लिक तथा 1948 में इसने संघात्मक –संविधान अपनाया । इसका आधार अमरीकी मॉडल था, इसके माध्यम से दूरवर्ती प्रान्तों को संयुक्त किया गया तथा ब्रासीलिया संघीय 'राजधानी बनाई गई ।

2. **आपसी समझौते पर आधारित संघीय राज्य** (Federal States based on compromise) – कुछ संघीय राज्यों ने स्वयं अर्थात् वहाँ के निवासियों ने इसे अपनाया है। नाइजीरिया और भारत इसी श्रेणी के संघीय राज्य कहे जा सकते है । नाइजीरिया का प्रारम्भिक संघीय स्वरूप औपनिवेशिक ब्रिटिश और स्थानीय नेताओं ने स्वीकार किया तथा 1954 में इसे क्रियान्वित किया गया । नाइजीरिया में तीन मूल स्थल हैं तथा अनेकों आदिवासी जातियाँ हैं जिनकी भाषायें भी पृथक् हैं । यहाँ स्वतन्त्रता के पश्चात् गृह युद्ध की दिशायें हो गई, जिनहें कठिनाई से शान्त किया गया तथा देश को 12 प्रदेशों में विभक्त कर संघीय स्वरूप दिया गया

भारत जब 1947 में स्वतंत्र हुआ तो यही लगभग 582 छोटे–बड़े राज्य ने । थे क्षेत्रिय विविधता, विभिन्न भाषायें, धर्म यहाँ प्रचलित हैं । फलस्वरूप इनमें समन्वय अत्यधिक कठिन कार्य था । किन्तु कुशलता से राज्यों का पुर्नगठन किया गया, केन्द्र शासित प्रदेश बनाये गये! केन्द्र को शक्तियाँ प्रदान की तथा राज्यों को भी पर्याप्त अधिकार दिये गये । राज्यों का पुर्नगठन आधार भाषा को बनाया गया, अनेक विवादों का जन्म हुआ । बम्बई राज्य को बाद में गुजरात ओर महाराष्ट्र में तथा पंजाब को हरियाणा और पंजाब के रूप में राज्य बनाये गये । अभी भी यदा–कदा नये राज्यों की

मांग उठती रहती है जो इतने बड़े देश में स्वाभाविक है । किन्तु 'भारत का संघात्मक स्वरूप अपने आप में विशिष्ट है, जिसका संवैधानिक आधार सुदृढ़ है ।

3. **केन्द्रीयकृत संघात्मक राज्य** (centralized federal states) - इस श्रेणी में वे संघात्मक' राज्य है जहां केन्द्रीय शक्ति की प्रधानता होते हुये भी संघीय स्वरूप है । पूर्व सोवियत संघ और यूगोस्लाविया इसके उत्तम उदाहरण है । सोवियत संघ जैसे विशाल विविधता से युक्त राज्य में साम्यवादी क्रान्ति के पश्चात् केन्द्रीय शक्ति की प्रधानता के साथ विभिन्न प्रान्तो को स्थानीय प्रशासन के लिये बनाया गया । सोवियत संघ के 15 रिपब्लिक (प्रान्त) वृहत सांस्कृतिक समूहों के आधार पर हैं, जिनका स्तर समान है, किन्तु मूल शक्ति का केन्द्र मास्को या केंद्र– है– । 15 वृहत भागों को पुन: अनेकों स्वायत्त उपविभागों में विभक्त किया गया है, जिन्हें Autonomous Oblast (A.OI) कहा है । देश की सुरक्षा, नीति निर्धारण, विकास योजनायें और सभी निर्देश केन्द्रीय सता में ही निहित हैं।

यूगोस्लाविया मैं 1919 तक एकात्मक शासन था जो असफल रहा, फलस्वरूप 1939 मै संघीय स्वरूप अपनाया गया, जिसमें सभी समूहों को प्रतिनिधित्व दिया गया तथा विभिन्न प्रान्तों का गठन किया गया । किन्तु यहाँ भी शक्ति का केन्द्र साम्यवादी 'सरकार द्वारा नियन्त्रित केंद्र है ।

4. **आरोपित संघात्मक राज्य** (Imposed federal states)- कुछ संघ ऐसे है जहाँ संघात्मक स्वरूप वहाँ के निवासियों की इच्छा के विरूद्ध या उनसे पूछे बिना लागू किये गये हैं । इनमें अल्पमत के शक्तिशाली होने से वे शेष पर अपनी इच्छा आरोपित करते हैं । इस प्रकार दे संघीय राज्य दीर्घजीवी नहीं होते । जैसे माली संघ मध्य अफ्रीका संघ, वेस्टइण्डीज संघ. पाकिस्तान आदि । इस प्रकार का संघात्मक स्वरूप पूर्व औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा आरोपित किया जाता रहा है । मध्य अफ्रीका संघ एक दशक में समाप्त हो गया, पाकिस्तान से पूर्वी भाग बंगला देश के रूप में अलग हो गया । –तात्पर्य यह है वि) संघात्मक स्वरूप जब आरोपित होता हे इसकी सफलता पर संदेह होता है और वह अधिकांशत: असफल हो जाता है । यदि स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार उसका निर्धारण होता है तो वह अवश्य ही सफल होता है ।

बोध प्रश्न – 2

1. ओ.एच. के स्पेट का संघात्मक पर लिखे लेख का क्या नाम है?
2. The political Geography of Federalism लेख के लेखक कौम हैं(
3. संघात्मक राज्य की प्रमुख विशेषता क्या होती है?
4. संघीय क्षेत्र (Federal territory) से क्या तात्पर्य है?
5. संघात्मक शासन वाले पाँच देशों के नाम लिखिये ।
6. संघात्मक राज्यों के प्रकारों के नाम लिखिये ।
7. संघात्मक राज्यों में केन्द्र सामान्यतया कौनसे कार्य सम्पादित करता है?

6.7 संघवाद का भौगोलिक पक्ष (Geographical aspects of Federalism)

राजनीतिक भूगोलवेत्ताओं ने संघात्मक शासन व्यवस्था के विविध पक्षों का विशद अध्ययन किया है । उनके अनुसार संघवाद या संघात्मक शासन के राज्यों को अन्य शासन व्यवस्थाओं की तुलना में अधिक भौगोलिक माना है । जैसा कि के.डब्ल्यू रोबिन्सन ने लिखा है –

"A federation is the most geographically expressive of all political systems. It is based on the existence of regional differences,and recognizes the claims of the component ageas to perpetuate their individual characters.....

Federation does not create unity out of diversity;it enables the two to coexist

(K,W.Robinson: Sixty years of Federation of Australia,1961,Geog.Review,p.2)

स्पष्ट है कि संघात्मक व्यवस्था अधिक भौगोलिक है क्योकि इसका मूलाधार प्रादेशिक विविधता जो प्रत्येक देश में होती है । भूगोल का आधार भी क्षेत्रीय विविधता है और संघात्मक व्यवस्था का भी । विविधता में एकता स्थापित कर उनमें आपसी सहयोग. समन्वय एवं सामन्जस्य स्थापित करना इस व्यवस्था का अंग है । भारत जैसे देश में जहाँ प्राकृतिक. आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता अत्यधिक है वहाँ संघात्मक शासन व्यवस्था विविधता में एकता का सूत्र प्रस्तुत करती है । इसका एक लाभ यह भी होता है कि एक क्षेत्र अथवा प्रदेश दूसरे का पूरक होता है, जैसे एक प्रदेश में कृषि की प्रमुखता है वो दूसरे में खनिज, कहीं औद्योगिक विकास अधिक है तो अन्य क्षेत्र मैं मानव संसाधन । तात्पर्य यह है कि इसके माध्यम से सहअस्तित्व विकसित होता है, अत: यह अधिक भौगोलिक है ।

संघात्मक राज्यों के भौगोलिक होने के अन्य कारण हैं–

1. प्रत्येक– क्षेत्र या राज्य में विविधता होना, अर्थात् विविधता भौगोलिक नियम है, उस विविधता को नकारा नही जा सकता उससे सामन्जसय ही किया जा सकता है।
2. भौगोलिक विविधताओं में संघ एकता स्थापित करता है, उन्हें एक पटल पर मिलाता है, उन्हें साथ–साथ रहकर सह–अस्तित्व से रहना सिखाता है ।
3. इसके माध्यम से सामाजिक एकत्व (Social solidarity) की भावना जागृत होती 'है। विभिन्न भाषा, धर्म जाति के लोग अलग होते हु ये भी संघ से सम्बन्धित रहते हैं ।
4. इनमें दोहरा प्रशासन होता है – राज्य एवं केन्द्र को क्षेत्रीय विकास की गति मिलती है ।

5. राज्य एवं केन्द्र मिलकर आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है तथा एक इकाई का दूसरे के साथ अन्तर सम्बन्ध स्थापित होती है । अत: देश के विभिन्न भागों की आवश्यकता देश में ही पूर्ण होने की आशा रहती है ।
6. महत्वपूर्ण विषय जैसे सुरक्षा, विदेश व्यापार, विदेश नीति योजना, संचार आदि केन्द्र के अधिकार क्षेत्र में होने के कारण राज्य महसूस करते –हैं और अपना समस्त ध्यान इसी ओर लगाते हैं ।

मूलरूप से संघात्मक शासन व्यवस्था में विविधता में एकता की भावना होती है । उन पर आरोपित न होकर आपसी सहयोग से होती है । जहाँ यह आरोपित होती है, अपितु संघ न केवल अस्थिर हो जाता है अपितु समाप्त भी हो जाता है । अनेक देशों का भौगोलिक विस्तार भी उन्हें संघवाद की ओर प्रेरित करता है । ब्राजील के सम्बन्ध में ब्लिज के विचार–

"To Brazil geography and economics permit no other form of politicoterritoial organization then federalism"

संघवाद के सम्बन्ध में दीक्षित के ये विचार विशेष महत्व के हैं.

"Although of special relevance to political geography , federalism may also be of interest of the social geography interested in social integration and diversity, to the economic geography studying the role of political institutions in economic growth and to the historical geographers evaluating spatial interactions in the genesis and evolution of some of the new nations."

(Dixit, R.D.,Political Geography,1982

संघ के विभिन्न भागों में विविधता का होना स्वभाविक है । अनेक मुद्दों जैसे आर्थिक. धार्मिक. ऐतिहासिक, भाषायी, सांस्कृतिक आदि भिन्नतायें कभी–कभी गतिरोध उत्पन्न करती हैं और विवादों का कारण भी बनती है । इस दृष्टि से संघात्मक शासन मात्र राजनीतिक एकता का ही..प्रवास नहीं करता अपितु सभी क्षेत्रों की सांस्कृतिक धरोहर का भी पूर्ण सम्मान करता है । संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि संघात्मक राज्य एकात्मक राज्यों की तुलना में अधिक भौगोलिक होते है. यद्यपि यह उनकी सफलता का मानदण्ड नहीं है ।

6.8 सारांश (Summary)

राजनीतिक भूगोल में राज्यों के विविध पक्षों का अध्ययन किया जाता है । इसी के अन्तर्गत राज्यों की शासन व्यवस्था का भी भौगोलिक परिवेश में विवेचन किया जाता है । इस सम्बन्ध में अनेक भूगोलवेत्ताओं जैसे ओ.एच.के.स्पेट, प्रेसकॉट हॉफमेन, रोबिन्सन ब्लिज, पोंड्स आदि ने अध्ययन किया है । भारत में आर.डी. दीक्षित का कार्य उल्लेखनीय है ।

विश्व में एकात्मक और संघात्मक व्यवस्था द्वारा शासन में केन्द्रीय सरकार का पूर्ण नियन्त्रण होता है, वही नीति निर्धारित करती है, वित्तीय व्यवस्था करती है तथा सम्पूर्ण प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन करती है । एकात्मक राज्य छोटे. सघन बसे तथा संगठित क्षेत्रों के लिये उपयुक्त होते हैं । यूरोप में अनेक एकात्मक राज्य हैं । लेटिन अमेरिका में सभी मध्य अमरीकी देशों में एकात्मक सरकारें हैं । दक्षिणी अमेरिका में कोलम्बिया. इक्वेडोर, पीरू, चिली, बोलीविया, पेराग्वे एकात्मक राज्य है । अफ्रीका, मध्य पूर्व के देश तथा अरब देशों में भी एकात्मक सरकारें हैं । दक्षिणी–पूर्वी एशिया में मलेशिया के अतिरिक्त सभी एकात्मक राज्य हैं । एकात्मक राज्यों के तीन प्रकार क्रमश: केन्द्रीयकृत, अत्यधिक केन्द्रीय एवं समायोजित हैं ।

संघात्मक राज्यों में एक केन्द्रीय सरकार के साथ–साथ प्रांतो/प्रदेशों की सरकार भी होती है । अनेक महत्वपूर्ण विषय जैसे रक्षा, विदेश सम्बन्ध, व्यापार, योजना आदि पर केन्द्र का पूर्ण नियंत्रण होता है जबकि अन्य समस्त विषयों पर केन्द्र एवं राज्य समन्वित' रूप से कार्य करते हैं । केन्द्र एवं राज्यों में आपसी सहयोग एवं समन्वय द्वारा हो समुचित योजनाओ का कार्यान्वयन किया जाता है । संघात्मक राज्य के चार प्रकार हैं – आपसी हित पर आधारित संघ राज्य, आपसी समझौते पर आधारित संघीय राज्य, केन्द्रीयकृत संघात्मक राज्य तथा आरोपित संघात्मक राज्य । संघात्मक राज्यों का भौगोलिक दृष्टि से उपयुक्त माना जाता है क्योकि वे प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता में एकता को प्रदर्शित करते हैं। क्षेत्रीय विविधता भूगोल का मूल आधार है जिसका सही निरूपण संघीय व्यवस्था में होता है ।

6.9 शब्दावली (GlossaryGlossary)

Unitary	:	एकात्मक
Federal	:	संघात्मक
Federalism	:	संघवाद
Spatial Unit	:	स्थानिक इकाई
Territorial	:	क्षेत्रीय
Functional	:	कार्यात्मक
Centrallzed	:	केन्द्रीयकृत
Centripetal	:	.केन्द्रोमुखी
Federal territory	:	संघीय क्षेत्र
Social solidarity	:	सामाजिक एकत्व

6.10 सन्दर्भ ग्रन्थ (References)

1. Dixit,R.D. : Political Geography,Tata McGraw Hill Pub.co., New Delhi,1982

2. Blij,H.J.de : Systematic Political Geography,John wiley,1973
3. Prescott,J.R.V : The Geography of State Politicachinson University . Library,London,1978
4. Pounds,N.G. : Political Geography ,McGraw Hill,1963
5. सक्सेना, एच.एम.: : राजनीतिक भूगोल, रस्तोगी, मेरठ

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न – 1

1. भौगोलिक दृष्टि से राज्य एक स्थानिक इकाई (Spatial Unit))
2. प्रशासनिक शक्तियों का विभाजन क्षेत्रीय एवं कार्यात्मक पर किया जाता है ।
3. एकात्मक राज्य में सभी शक्तियाँ केन्द्र में होती है ।
4. डेनमार्क, स्वीडन, पुर्तगाल, स्पेन, न्यूजीलैण्ड
5. यूरोप में
6. चीन
7. एकात्मक राज्य तीन प्रकार के है– केन्द्रीयकृत, अत्यधिक केन्द्रीय तथा समायोजित।

बोध प्रश्न – 2

1. Geography and Federalism
2. आर. डी.दीक्षित
3. संघात्मक राज्य में केन्द्र में शासन व्यवस्था के साथ–साथ राज्यों में भी शासन व्यवस्था होती है ।
4. राजधानी क्षेत्र को सामान्यतया संघीय क्षेत्र कहा जाता है ।
5. स्विट्जरलैण्ड. ब्राजील, भारत, नाइजीरिया, आस्ट्रेलिया
6. आपसी हित पर आधारित संघीय राज्य, आपसी समझौते पर आधारित संघीय राज्य एवं आरोपित संघीय राज्य
7. संघीय राज्यों में केन्द्र विशेषकर रक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, विदेश व्यापार एवं
8. नीति निर्धारण का कार्य करता है

6.12 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. एकात्मक राज्य किसे कहते हैं, उनकी क्या विशेषता होती है? इनका विश्व विवरण लिखिये ।
2. एकात्मक राज्यों की विशेषताओं का वर्णन करते हुए इनके प्रकारों का वर्णन कीजिये
3. संघात्मक राज्यों की प्रकृति का वर्णन करते हुए उनके प्रकार बताइये ।

4. संघात्मक राज्यों के प्रकारों का वर्णन कीजिये ।
5. संघवाद के भौगोलिक पक्ष का विवेचन कीजिये ।
6. **टिप्पणी लिखिये** –
   (1) एकात्मक राज्यों की प्रकृति
   (2) एकात्मक राज्यों का विकास एवं वितरण
   (3) केन्द्रीयकृत एवं समायोजित एकात्मक राज्य
   (4) संघवाद का भौगोलिक पक्ष
   (5) केन्द्रीयकृत संघात्मक राज्य